

PROJECT

On

ENVIRONMENT STUDY

Name - Santoshi

Class - B. Com. 1st year

College - Dr. B.S. B. A. College
Dongarjogam.

Year 2019 To 20.

Guided by

.....
.....

Submitted by

Santoshi

Acemark

CERTIFICATE

This is to certify that Mr. / Miss / Ku.

Name - Santoshi

Roll No. 39 25020040096 is a student

of ENVIRONMENT STUDY has completed a

project File / Assignment on Topic:- Natural Resources

under my guidance.

Subject Teacher

Principal

Acemank

INDEX

S.No.	Particulars	Page No.
	Topic: — Natural Resources	
(i)	संसाधन (Resources)	1
(ii)	संसाधनों का वर्गीकरण	1-3
(iii)	प्राकृतिक संसाधन एवं सम्बंधित समस्याएँ	3-5
(iv)	प्राकृतिक संसाधन में वनों का उपयोग व अतिदहन	5-6
(v)	वन विनाश के निवारण के उपाय	6-8
(vi)	प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में आम	.
(vii)	आदमी की भूमिका	8 -
(viii)	सम्पोषित जीवन-शैली के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग	
(ix)	ऊर्जा के रूप एवं स्रोत /	
Q	प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग कौन सचित्र चित्रण कीजिए /	

प्राकृतिक संसाधन के कार्य एवं परिभाषा
 दो शब्दों में मिलकर
 Resources Re + Sources

बना है। 'Re' का अर्थ 'दीर्घ काल' से है तथा
 का अर्थ 'साधन' है। अतः संसाधन वे
 Resources स्रोत हैं जिनका उपयोग मानव दीर्घ
 काल तक करते हैं।

प्राकृतिक संसाधन

मैकनाल के अनुसार - "प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन
 हैं जो प्रकृति द्वारा प्रदान किये जाते हैं तथा
 मानव के लिए उपयोगी होते हैं।" कुछ प्राकृतिक
 संसाधन निम्नलिखित हैं - जल, वायु, मृदा, शक्ति,
 वन संसाधन तथा खाद्य संसाधन आदि।

संसाधनों का वर्गीकरण

संसाधनों को समुच्चय रूप से दो भागों में बाँटा गया है -
 (i) प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources) जैसे संसाधन

(ii) जो प्रकृति के द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं व
 इनका निर्माण प्रकृति के द्वारा होता है। इनके निर्माण
 में मानव की कोई भूमिका नहीं है। प्राकृतिक
 संसाधन कहलाते हैं।

पर्यावरण के दृष्टिकोण के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों को जैविक, अजैविक दो भागों में बाँटा गया है। जैविक संसाधन में वनस्पति व जीव-जंतु आते हैं। जबकि अजैविक संसाधन में मृदा, जल, वायु, ऊर्जा आदि सम्मिलित हैं।

एक अन्य आधार पर प्राकृतिक संसाधनों को दो क्रमिक भागों में बाँटा गया है -

(I) नवीनीकरण संसाधन (Renewable Resources) -

ऐसे संसाधन जिन्हें उपयोग के बाद पुनः उत्पादित किया जा सकता है या जो पुनः प्रयोग में लाये जा सकते हैं, उन्हें नवीनीकरण संसाधन कहते हैं, जैसे:- वन वृक्ष, - क्षेत्र, मृदा, जीव-जंतु, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि।

(II) अनवीनीकरण संसाधन (Non-renewable Resources)

ऐसे संसाधन जिनका एक बार दोहन करने पर उनकी पुनः पुति या पुनः निर्माण अविद्यमान में सम्भव नहीं है। क्योंकि उनका निर्माण पृथ्वी के भीतर सतह में करोड़ों वर्षों के बाद होता है। उन्हें नवीनीकरण संसाधन कहते हैं। जैसे - कोयला, पेट्रोलियम, धातुएँ आदि।

II मानव संसाधन (Human Resources) -

जिन्हें मानव संपदा, प्राकृतिक तत्वों को अपने ज्ञान, भ्रम व तकनीकी के आधार पर संसाधन के रूप में संपुक्त करता है। उन्हें मानवीय संसाधन कहते हैं।

प्राकृतिक संसाधन एवं सम्बंधित समस्याएँ

पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधनों का वितरण असंतुल व अनियमित है। संसाधन का आकलन, प्राप्त करने की क्षमता और तकनीकी योग्यता पर निर्भर करता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अल्पविक विकसित करने से प्राकृतिक संसाधनों के बाजार नीच गति से घटते जा रहे हैं। व पर्यावरण भी विकृत हो रहा है।

खनिजों के दोहन/खनन का पर्यावरण पर प्रभाव

विश्व जनसंख्या वृद्धि तथा बढ़ते औद्योगिकरण के कारण खनिजों का दोहन दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। खनन के निम्न क्षेत्रों में प्रभाव पड़े हैं जो निम्न हैं:-

(i) जल प्रदूषण /	(ii) धूमि प्रदूषण /
(iii) वायु प्रदूषण /	(iv) वनों का नाश /
(v) कृषि भूमि में कमी /	(vi) अपशिष्ट निस्तारण /

1. **जल प्रदूषण** — स्वनिज पदार्थों के शुद्धिकरण के लिए अल्पधिक मात्रा में जल के आवश्यकता होती है जिससे अल्पधिक जल प्रदूषण होता है। स्वनिज से निकाले अपशिष्ट पदार्थों के जल के साथ वाहकर जल स्रोतों, नदियाँ, झीलों आदि में प्रदूषण फैलाता है। प जलीय जीवों तथा पौधों को नुकसान पहुंचाता है।
2. **ध्वनि प्रदूषण** — स्वनिज क्लिपाओं में त्वयुक्त विस्फोटकों तथा मशीनों के द्वारा अल्पधिक मात्रा में ध्वनि प्रदूषण होता है।
3. **वायु प्रदूषण** — स्वनिज क्लिपाओं के लिए त्वयुक्त विस्फोटकों से उत्पन्न अल्पधिक मात्रा में स्वनिज व धूल के कण वायु में मिलकर वायु प्रदूषण होता है।
4. **वनों का हास** — विभिन्न स्थानों पर स्वनिज मुख्यतः वनों के क्षेत्र में पाये जाते हैं अतः स्वनिजों के उत्खनन तथा स्वनिजों के परिवहन में वनों से उत्पन्न धाधा के कारण बड़े-बड़े वन क्षेत्रों को नष्ट कर दिया जाता है अतः यह पर्यावरणीय असंतुलन बढ़ता है। इससे क्षेत्र का तापमान बढ़ जाता है तथा धरती की मात्रा कम हो जाती है। मृदा अपरदन तथा बाढ़ आदि भी इसी के परिणामस्वरूप होते हैं।

5. कृषि भूमि में कमी — खनिज खिपाओं के लिए कृषि योग्य भूमि में कमी आ रही है। क्योंकि खनिज के खनन के लिए समतल कृषि भूमि को नष्ट कर दिया जाता है।

6. अपशिष्ट निस्तारण — खनिजों के शुद्धिकरण से उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों को आस-पास के क्षेत्र पर बिना किसी व्यवस्था के डाल दिया जाता है। जिससे आस-पास की भूमि अनुपयोगी रह जाती है। ये अपशिष्ट वायु, भूमि तथा वर्षा काल के दौरान जल प्रदूषण भी फैलाते हैं।

खनिजों के खनन के पर्यावरण पर अन्य प्रभाव —

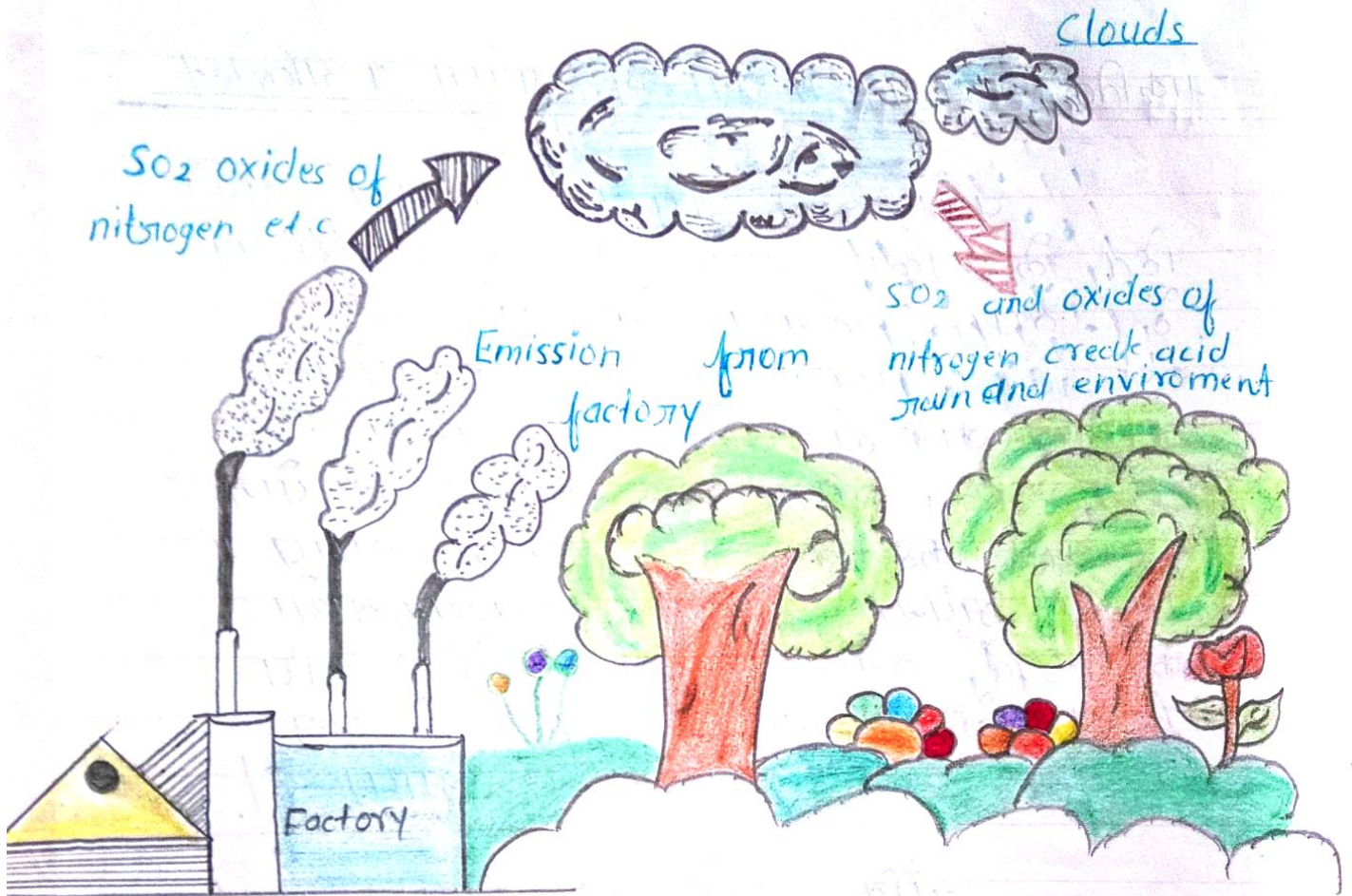
- (1) खनिजों के परिवहन के लिए विभिन्न विकास कार्यों, सड़कों, रेलमार्गों आदि का निर्माण होता है।
- (2) खनिज संसाधनों का वितरण सतत नहीं होता है, अतः प्रत्येक खनिज के उपयोग के लिए बाह्य क्षेत्रों में आपत्ती निर्भरता रहती है।
- (4) विभिन्न खनिजों, जैसे - लोहा आदि का उपयोग ट्रक, मोटर, रेल तथा इंधन आदि बनाने में किया जाता है।

(5) कच्ची - कच्ची खनिजों की तार्त के लिए युद्ध भी हो जाते हैं।

प्राकृतिक संसाधन में वनों का उपयोग व अतिक्रोहन

वनों का उपयोग मानव अपने हित के लिए वर्षों से करता आया है तथा वर्तमान में भी कर रहा है। मानव के लिए उपयोगिता के कारण ही वनों का महत्व है। किन्तु एक सीमा से अधिक उपयोग अत्यधिक कहलाता है। प्राचीन समय में मानव अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति वनों से करते थे। कृषि विधा के विकास से वनों के ह्रास में कुछ मात्रा में अंतर आया है।

चूँकि वृक्षों का उगना स्वाभाविक विधा है अतः कम या सीमित मात्रा में कटाई होने पर वनों का विनाश नहीं होता है। आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि के कारण मानव के द्वारा उपयोगी वस्तुओं की आवश्यकताएँ भी बढ़ गई हैं। अतः वनों का अत्यधिक तीव्र गति से विनाश हो रहा है। इससे वनों के विनाश की समस्या उत्पन्न हो रही है। यदि हम वनों का सीमित मात्रा



[Sulphur dioxide and oxide of nitrogen create rain and environment pollution].

में तथा सौच-समझकर उपयोग करें तो हम पनो से लम्बे समय तक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पनो के विनाश के निवारण के उपाय

- (i) इमारती लकड़ी के फर्नीचर के स्थान पर लोहे या कल्प धातुओं से फर्नीचर सामग्री का निर्माण करना।
- (ii) सुरक्षित पन को सरकार द्वारा निर्धारित करना।
- (iii) पनो के स्थान पर खनन पर रोक लगाना।
- (iv) वृक्षारोपण कार्यक्रम द्वारा वृक्षों को लगाना।
- (v) लोगों में वृक्षों की उपयोगिता के बारे में जनचेतना फैलाकर।
- (vi) औपचारिक महत्व के वृक्षों की संरक्षण देना।

(vii) खेतों में छोटे-छोटे पेड़ लगाना जिससे जलवायु लकड़ी प्राप्त हो सके।

(viii) कृषि की नवीन तकनीक (ग्रो फोरैस्ट्री व फार्म फोरैस्ट्री की विधियाँ अपनाना।

प्रत्येक देश में वनों का क्षेत्र 33% से कम नहीं हो। ऐसा कानून बनाना।

(x) पाँच F वाले पेड़ों, जैसे - Food, Fooden, Fuel, Fiber, Fertilizer को लगाकर जिससे सारी आवश्यकताएँ पूरी हों।

(xi) वनों में मानवीय हस्तक्षेप पर रोक लगाकर।

Q1. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं उपयोग और सचित्र चित्रण कीजिए।

Ans. /

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण

अविषैकपूर्ण दोहन प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास का प्रमुख कारण है। प्राकृतिक संसाधन भले ही अनेक राष्ट्रों में पाये जाते हैं परन्तु इनका अविषैकपूर्ण तथा अन्धाधुंध दोहन अमरुत मानव जाति के लिए अल्पत चिन्तनीय है। ये संसाधन हमें अपनी आजी पीढ़ी के लिए भी बचाने हूँगे। अतः हमें प्राकृतिक संसाधनों का विषैकपूर्ण उपयोग करना होगा।

प्राकृतिक संसाधन को दीर्घकाल तक प्राप्त करने के लिए हमें उनका सौच-समझकर उपयोग करना होगा तथा इससे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को निम्न प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों का बचका चाहिए-

1. व्यक्ति केवल अपने धारे में न सौचकर आजी पीढ़ी के उपयोग हेतु भी इन संसाधनों को बचाकर रखे।

- ii. परिवार को छोटा ही रखें।
- iii. आरोग्यपूर्ण जीवन जीयें।
- iv. संसाधनों का वारंशार उपयोग कर उपयोगिता बढ़ायें।
- v. प्राकृतिक संसाधनों को सम्पूर्ण विश्व की सम्पदा समझकर उनका उपयोग करें।
- vi. दैनिक जीवन में आधारभूत प्राकृतिक तत्वों तथा - भूमि, जल, वायु आदि की वृद्धि न कर शुद्ध बनाते रहें।
- vii. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत (सौर ऊर्जा, गंधक गैस) आदि का उपयोग करें।
- viii. वाहनों का प्रयोग छोटी-छोटी दूरियों के लिए नही करें।
- ix. संसाधन संरक्षण सम्बन्धी सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं में सहयोग करें तथा बच्चों को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु प्रेरित करें।
- x. जल तथा बिजली का प्रयोग कम से कम करें।
- xi. कृषि के लिए जैविक खाद का प्रयोग करें।
- xii. वृक्षों को लगातार हरियाली बनाये रखें।

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग

सुरक्षित जीवनशैली संसाधनों के उचित या विवेकपूर्ण उपयोग से ही संभव है। आधिकाधिक जनसंख्या बढ़ने से उनके लिए संसाधनों की उपलब्ध करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का आविवेकपूर्ण दोहन हो रहा है। जिससे संसाधन पर रहे हैं। व पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ रहा है। यह आने वाली पीढ़ी के लिए हानिकारक है। भौतिकता की दृष्टि में विकसित देश अधिक संसाधनों का दोहन कर रहे हैं। जबकि विकसित देशों में न्यूनतम उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक संसाधनों को सच्ची विश्वास मानते हुए इसका उपयोग आपश्पकतानुसार ही करना चाहिए। इसके लिए ऐसे संसाधन जो शीघ्र समाप्त होने वाले हैं। उनके उपयोग की नियन्त्रित करना होगा तथा लम्बे समय तक निश्चि रूप से संसाधनों का उपयोग करने के लिए वर्तमान उपयोग की दर को घटाना होगा, ताकि हमारी आवश्यकताएँ भी पूरी हो तथा प्राकृतिक संसाधनों को भी कम क्षति पहुँचे।

देश में संसाधनों की माँग दो बातों पर निर्भर करती है :—

- (i) प्रति व्यक्ति माँग।
- (ii) कुल जनसंख्या द्वारा माँग।

इस प्रकार हमें संसाधनों की खपत के लिए मुख्य रूप से दो प्रयास करने होंगे :—

- (i) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करना।
- (ii) प्रति व्यक्ति संसाधनों के उपयोग में कमी करना।

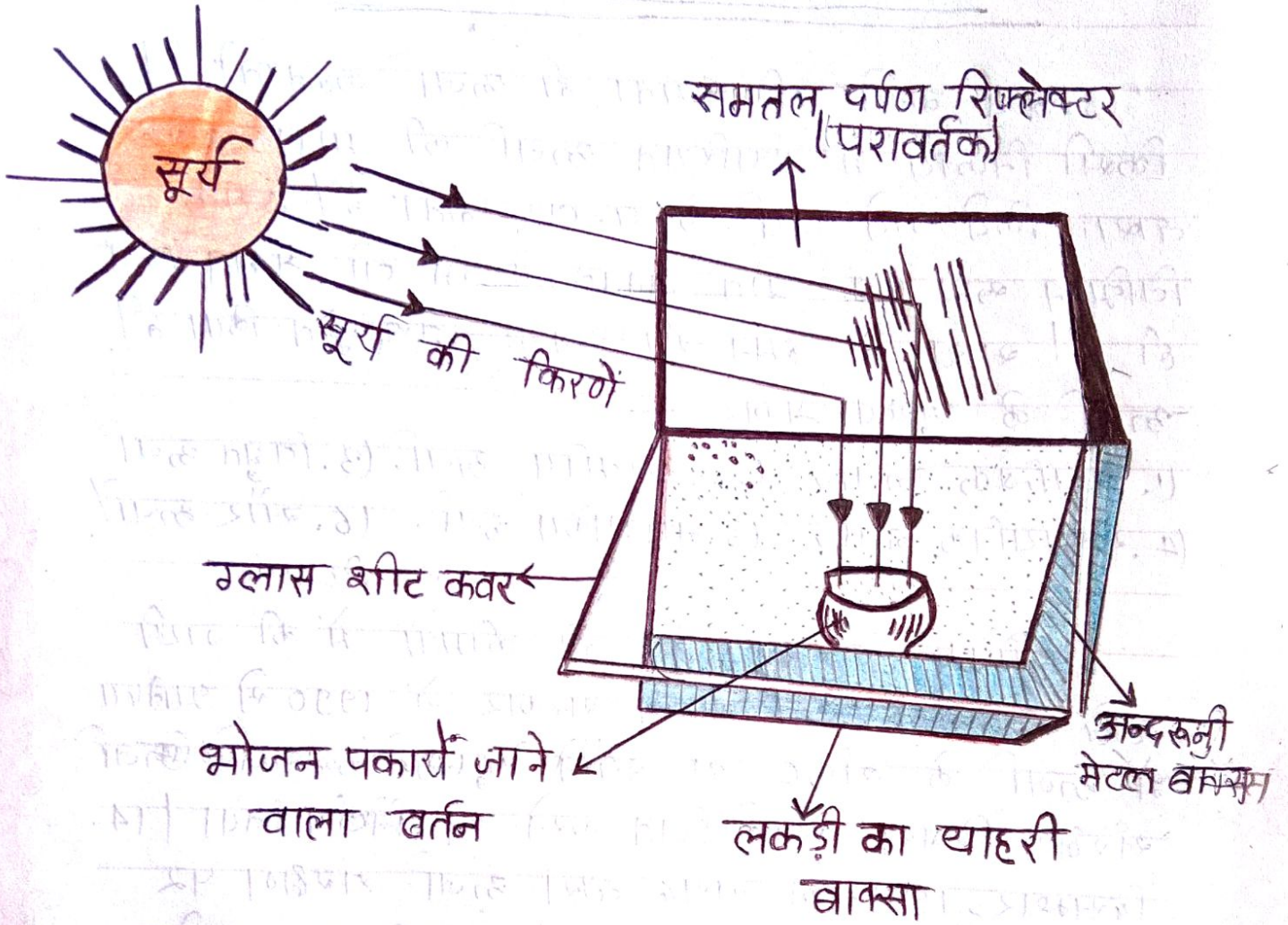
ऊर्जा के रूप एवं स्रोत

कार्य करने की क्षमता ही ऊर्जा कहलाती है। किसी निकाय में उपस्थित ऊर्जा की मात्रा उसके द्वारा किये गये कार्य के बराबर होती है। इसके विभिन्न रूप एवं स्रोत तकृति से हमें तो प्रयत्न किये ही हैं। साथ ही हमने भी इसको विस्तारित किया है। ऊर्जा के मुख्य प्रकार —

1. यान्त्रिक ऊर्जा, (2. ऊष्मीय ऊर्जा, (3. विद्युत ऊर्जा
4. रासायनिक ऊर्जा, (5. नाभिकिय ऊर्जा, (6. सौर ऊर्जा।

'ओपेक' के द्वारा तेल की कीमतों में की गयी वृद्धि के फलस्वरूप भारत सरकार ने 1990 से आदिप्य में ऊर्जा के संकट से उबरने हेतु प्रत्येक वर्ष 'ऊर्जा संरक्षण दिवस' आयोजित करने का निर्णय लिया। 14 दिसम्बर, 1990 को संसद द्वारा ऊर्जा संरक्षण पर प्रस्ताव पास कर दिया गया। 14 दिसम्बर को प्रस्ताव पास होने के कारण 14 दिसम्बर को तत्तिवर्ष 'ऊर्जा संरक्षण दिवस' व सप्ताह मनाया जाता है। संरक्षण व ऊर्जा प्रबन्धन के प्रयासों के फलस्वरूप ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के बारे में जन सामान्य को जानकारी देने एवं उपयोग में लाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास किये जाने लगे।

सौर पत्र के पीछे



सौर पत्र के पीछे

सूर्य की किरणें

समतल दर्पण रिफ्लेक्टर (परावर्तक)

ग्लास शीट कवर

अच्छी मेटल बाक्सा

लकड़ी का याहरी बाक्सा

कूकनी

भोजन पकाया जाने वाला बर्तन

अक्षय ऊर्जा के विभिन्न वैकल्पिक स्रोत निम्न हैं—
 (1. सौर ऊर्जा, (2. पवन (3. भू-तापीय,
 (4. जल शक्ति (5. ज्वार भाटा (6. लकड़ी का कोयला,
 (7. गोबर गैस/घावो गैस, (8. पीट (खनिज कोयला,
 (9. पशुकों एवं कृषि के अपशिष्ट/

सौर ऊर्जा - सूर्य ऊर्जा का अनन्त स्रोत है।
 सूर्य के पास निरन्तर हाइड्रोजन अणु हीलियम
 अणुओं में परिवर्तित होते रहते हैं। इसमें से कुछ
 क्षणमान ऊर्जा में बदल जाता है। सामान्यतः
 4 हाइड्रोजन का क्षणमान अणु से एक हीलियम अणु
 निर्मित होता है।

सूर्य ऊर्जा से सोलर कुकर, सोलर हीटर,
 सोलर पावर प्लाण्ट, सोलर घड़ी व तबका व टोलीय
 सेल का निर्माण किया गया है।

सोलर कुकर - इसमें सूर्य के विकिरणों
 का उपयोग भोजन पकाने, चावल, दाल, केरू, पेस्ट्री
 बनाने में किया जाता है। इसमें इन्धलेटेड घातु का
 एक चॉक्स होता है। जिसकी अंदर की दीवारें काली
 कर दी जाती हैं। इसके ऊपर एक मोटे पारदर्शी
 काँच की शीट टक्कन के रूप में होती है। व एक
 साधारण मिरर इसके एक कोर लगा रहता है।
 पकाने जाने वाले भोजन को घातु के धक्के में रख
 दिया जाता है। व साइड के मिरर को इस

तरह सामायोजित करते हैं। सूर्य से प्राप्त इन्फ्रारेड किरणों को पारदर्शी कंच पर परावर्तित कर दे। सूर्य की किरणें पारदर्शी कंच से होकर वक्से की ठाली सतह द्वारा अवशोषित कर ली जाती हैं व वक्से का तापमान 100° से से 140° से तक हो जाता है व इसमें रखा गया भोजन पक जाता है।

इसी प्रकार से सोलर हीट से सूर्यो के मासिम में पानी गर्म किया जा सकता है। सोलर झट्टी से 3000°C . तक तापमान उत्पन्न कर औद्योगिक उपयोग में लिया जा सकता है।

प्रकाश पोल्टीय सेल — इसका उपयोग सूर्य विकिरण से सीधे विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

गैस — इसमें 65 प्रतिशत मीथेन, 30% कार्बन डाइऑक्साइड तथा 1% हाइड्रोजन सल्फाइड तथा अल्प मात्रा में ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कार्बनमोऑक्साइड गैस होती है।

पवन ऊर्जा — पवन उत्पादन में लगी दो निजी कंपनियों सुजलीन व एनरकोन से 200 से अधिक लगी पवन चक्कियों से उत्पादित विद्युत भी 220 HV LV पर चलने को कहा गया है।



हेमचंद्र यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

(पूर्व नाम- दुर्ग विश्वविद्यालय, दुर्ग)

रायपुर नाका दुर्ग (छ.ग.)-491001

ई मेल : exam@durguniversity.ac.in

वेब साइट : www.durguniversity.ac.in

दूरभाष : 0788-2359100

ऑनलाईन वार्षिक/सेमेस्टर परीक्षा 2020-21 हेतु उत्तरपुस्तिका

COVID-19

कक्षा का नाम	उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन हेतु			
B.A 1 st year (Private)				
अनुक्रमांक (Roll No.)	प्रश्न क्र. प्राप्तांक प्राप्तांक (शब्दों में)			
35020010965	1			
अनुक्रमांक (शब्दों में)	तीन पाठ शून्य दो शून्य शून्य एक शून्य नौ दस पाठ	2		
नामांकन/Enrollment No. (नियमित छात्रों हेतु)		3		
पंजीयन क्र./Reg. No. (अमहाविद्यालयीन छात्रों हेतु)	2/35020010965	4		
छात्र/छात्रा का नाम	वासुदेव	5		
पिता का नाम	देवेन्द्र साहू	6		
विषय	पर्यावरण (प्रायोगिक)	7		
प्रश्नपत्र एवं प्रश्नपत्र कोड		8		
परीक्षा का दिन	सोमवार 11/05/21	9		
परीक्षा का दिनांक	25/05/21	10		
महाविद्यालय का नाम	शा. डॉ. सी. सी. सोहन शीमराव मार्ग- महाविद्यालय डोंगरगाव			
मोबाईल नम्बर	9111594176	योग:-		शब्दों में -
संलग्न उत्तरपुस्तिका में कुल पृष्ठों की संख्या				
केन्द्र अधीक्षक के हस्ताक्षर की सील		परीक्षक के हस्ताक्षर		

प्रस्तावना :-

भूकम्प, बाढ़, ज्वालामुखी का कटना, सुनामी, बाढक फटना, चक्रवात, तूफान आदि ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिस जिनसे आदियों में क्षति की अवस्था प्रकट है। आज दिन ऐसी आपदाएँ हमारे जीवन में प्रभावित करती रहती हैं।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार और कारण :-

प्राकृतिक आपदा कोई एक नहीं बल्कि प्रकृति भ्रमण-भ्रमण रूप में विनाश करती है। क्षति पर प्राकृतिक आपदाओं का भ्रमण सामान्य है क्योंकि यह प्रकृति का एक हिस्सा है। कुछ मुख्य प्राकृतिक आपदाओं का भ्रमण हमें आज दिन करना पड़ता है।

बाढ़ :-

जब अधिक वर्षा के कारण नदियों में जल स्तर बढ़ जाता है तब बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होती है। भारत में हर साल बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा का भ्रमण करना पड़ता है। बाढ़ का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है अतः इसके प्रभाव में लोगों की जान में तो बचाव जा सकता है लेकिन फिर भी भारी मात्रा में बाढ़ के कारण लोगों की जान-मन दोनों का नुकसान करना पड़ता है।

(ii) भूकंप :- धरती के निचले भाग में जब कण्ठ उत्पन्न होता है और तब धरती में मध्य-विनाश। जहाँ भी भूकंप आता है। वहाँ भारी विनाश होता है। भूकंप प्राकृतिक आपदा का सबसे विनाशक रूप है। भूकंप की वजह से बड़े-बड़े मकान व इमारतें धराशायी हो जाती हैं।

(iii) सुनामी :- समुद्र की तल में जब भूकंप आता है तब समुद्र में तीव्र हल-चल उत्पन्न हो जाता है जो एक भीषण सुनामी का रूप धारण कर लेती है। समुद्र में उत्पन्न सुनामी के ऊँची-ऊँची लहर उठती हैं और आस-आस के समुद्री इलाकों में तबह कर देती हैं।

(iv) टुकान और चक्रवात :- समुद्र में आने वाले टुकान और चक्रवात ही वजह से दुनिया के कई इलाकों में हर साल विनाशक बह जाती हैं। इन प्रकार के टुकान और चक्रवात के कारण बिन मौसम भारी बारिश होती है जिसके कारण बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा हवाओं के कारण भारी मात्रा में वर्षनाश होता है।

(v) प्राकृतिक आपदा से बचने के उपाय :- ① प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सावधानी और समझ-दारी होना जरूरी है।

[संयोग क्रमांक 02]

अवस्था :-

- उद्देश्य
- प्रस्तावना
- जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रकार
- और विकिरण
- मानवीय परिवर्तन के प्रभाव
- वनोत्पत्ति अन्य जीव पर करने वाले दुष्प्रभाव
- जल पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव
- निष्कर्ष

उद्देश्य :-

जलवायु परिवर्तन पर और

प्रस्तावना :-

जलवायु परिवर्तन वास्तव में पृथ्वी पर जलवायु की परिस्थितियों में बदलाव को कहा जाता है। यह निम्नलिखित बाह्य एवं आंतरिक कारणों से होता है। जिनमें और विकिरण, पृथ्वी की परिवर्तन, ज्वालामुखी विस्फोट, जेट, टेक्टोनिक्स आदि सहित अन्य आंतरिक एवं बाह्य कारण शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन के निम्न कारण :-

जलवायु में परिवर्तन होने वाले कारण निम्नलिखित हैं

(i) और विकिरण :- सूर्य से उत्सर्जित जो ऊर्जा पृथ्वी तक पहुँचती है और फिर हवाओं महा-सागरों द्वारा विश्व के विभिन्न भागों में आगे बढ़ती है वह जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है।

(ii) मानवीय गतिविधियाँ :- नए युग की तकनीकों का प्रयोग पृथ्वी पर कार्बन उत्सर्जन के दर को बढ़ा रहा है और इस प्रकार वातावरण को विपरीत रूप में प्रभावित कर रहा है।

इसके अलावा क्लोरीन कपांवरों फ्लोट रेक्टोनिक्स और ज्वालामुखी विस्फोटों से भी जलवायु में बदलाव हो सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव :-

वनी स्तं और वन्यजीव पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव

जलवायु परिस्थितियों में होने वाले व्यापक परिवर्तन के कारण कई पौधों और जानवरों की पुरा-

जनसंख्या विलुप्त हो गई है एवं कई अन्यो की
जनसंख्या विलुप्त हो गई ।

जलवायु पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव :-

जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तनों की वजह से
जल-प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव सह पड़ रहा
है। इसके परिणामस्वरूप ग्लोबियल विलियम विद्यमान जा
रहे एवं वर्षा अनियमित रूप से हो रही है और
साथ ही वर्षा का भारी परिस्थितिया परिवर्तन में
असंतुलन को बढ़ा रहे हैं।

निष्कर्ष :-

जलवायु परिवर्तन की समस्या को
गंभीरता से लेना आवश्यक है और वातावरण
को संभावित कर है मानवीय गतिविधियों
को वातावरण को स्वच्छ करने में योगदान
दे रहे, इनको नियंत्रण करना महत्वपूर्ण है।

Page No.

Roll No.

Date

नाम - डेमेर निवाड़

कक्षा - BSC-II (Maths)

Roll No - 35020070314

year - 2020-21

उत्तर क्र - 01

उद्देश्य - प्राकृतिक आपदाओं पर निबंध

प्राकृतिक आपदा - प्राकृतिक आपदा मतलब को पूरी तरह नैसर्गिक होती है। ये प्राकृतिक आपदा कभी भी आ सकती है। प्राकृतिक आपदा आने का कोई समय नहीं होता है।

तो कभी भी उत्पन्न हो सकती है। इस प्राकृतिक आपदाओं में कई सारे प्रकार के आपदाएँ शामिल हैं। जैसे की ज्वालामुखी भूकंप सुनामी और बहुत सारी ऐसी आपदाएँ शामिल हैं। जैसे कि ज्वालामुखी, भूकंप सुनामी और बहुत सारी ऐसी आपदाएँ जो पूरी तरह प्राकृतिक हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं की वजह से नैसर्गिक संपत्ति और इस दुनिया के सभी जीवों को बहुत बड़ा खतरा होता है। जो पूरे पर्यावरण के काफी नुकसान कारक है। कई प्राणियों की इस प्राकृतिक आपदा की वजह से मृत्यु भी हो जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ निम्न हैं।

भूकंप :-

भूकंप एक ऐसी प्राकृतिक आपदा जो किसी भी समय और किसी भी जगह पर आ सकती है। भूकंप कब आता है। और कितने देर में आता है इसके बारे में किसी को कोई खबर नहीं रहती है। लेकिन जब भी भूकंप आता है। तब तो सभी जीवों के लिए और प्राकृतिक संपत्तियों के लिए बहुत बड़ा इतिहासकारक साबित होता है। ये भूकंप तब होता है। जब धरती के

यंहर बड़े पत्थरों के प्लेसों का आपस में घर्षण होता है तब उस घर्षण की वजह से धरती की सतह डिगने लगती है। उनमें से कुछ भूकंप की तीव्रता बहुत कम होती है। वो कुछ भूकंप इतने शक्तिशाली होते हैं की उसके वजह से विनाशकारी नुकसान होता है।

भू-स्थलन और सुनामी का कारण

पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले बड़े तीव्रता वाले भूकंप ही भूस्थलन और सुनामी का कारण बन जाते हैं। इन भूकंपों की वजह से जब भूस्थलन और सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं, तब बहुत ज्यादा मात्रा में नुकसान होता है। इनमें बित डानी शैली प्रकाश की होती है। भूस्थलन की वजह से पहाड़ की विशाल चट्टानें बहुत तेजी से नीचे की ओर गिरती हैं, जिसकी वजह से ज्यादा मात्रा में प्राकृतिक और मानव निर्मित संपत्ति को नुकसान होता है। इसके बाद उस नुकसान से उबरने के लिए सभी लोगों को कई सालों लगते हैं।

डिम्स्थलन -

डिम्स्थलन तो प्राकृतिक आपदा है, जो लकीली इलाकों में आती है। ये आपदा भी भूस्थलन की तरह होती है। इसमें अगर किसी लकीली पहाड़ पर बर्फ ज्यादा जमा जाता है तो वडा की जगह गरी बन जाती है। तब तो बर्फ पूरी तरह से दूरने लगती है। वो बर्फ दूरती है की वजह से पहाड़ के नीचे की ओर आती है। जिसकी वजह से इस आपदा के सामने जो भी चीज आती है। उसका पूरी तरह से नुकसान हो जाता है। इस डिम्स्थलन

सबसे ज्यादा खतरा उन लोगों को होता है, जो लोग बर्फ से भरे पहाड़ी इलाके पर रहते हैं। जहाँ डिम रखलन की सबसे ज्यादा समस्या

सुनामी :-

जैसे धरती पर भूकंप आते हैं, वैसे ही समुद्रों के नीचे भी भूकंप आते हैं। कभी-कभी ये भूकंप इतने तेज होते हैं कि समुद्रों में बहुत बड़ी लहरें बन जाती हैं। ये लहरें इतनी बड़ी और तेज होती हैं कि कारण बहुत ज्यादा मात्रा में प्राकृतिक और जीवित होती हैं। जो हम सभी को बहुत बड़ा नुकसान देती हैं।

निष्कर्ष -

ऐसे ही कई सारी आपदाएँ इस दुनिया में होती हैं। जो हम सभी के लिए बहुत ज्यादा मात्रा में हानिकारक हैं। जिसे हम रोक नहीं सकते हैं। लेकिन इससे होने वाले नुकसान की हम सभी के और सरकार को कोई ना कोई कदम उठाने होंगे। जरा से उन प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली नुकसान कम हो सके।

प्रयोग क्र० 02

जल परिवर्तन पर लेख

उद्देश्य - जल वायु परिवर्तन पर लेख

जल वायु परिवर्तन :- जल परिवर्तन का अर्थ समय के साथ-साथ जल वायु में होने वाले किसी भी परिवर्तन से है, वह बड़े प्राकृतिक विचलन विलता के कारण हो या मानव के क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप हो। जलवायु परिवर्तन कई दशकों से लेकर लाखों वर्षों की अवधि के दौरान मौसम के स्वरूप से सांख्यिकीय वितरण में होने वाले महत्वपूर्ण एवं विश्वासी परिवर्तन हैं जल वायु परिवर्तन एक विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित रह सकता है अथवा सम्पूर्ण पृथ्वी पर धरित हो सकता है।

जल वायु परिवर्तन के कारण -

विस्तार रूप में जलवायु परिवर्तनों के कारणों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है -

- 1) प्राकृतिक कारण
- 2) मानवजनित कारण

प्राकृतिक कारण

(क) महाद्विपीक पृथक्करण - महाद्वीपों का निर्माण तब हुआ था जब लाखों वर्ष पूर्व धरती का एक बड़ा हिस्सा धीरे-धीरे पृथक् होना शुरू हुआ। इस अर गाव का जलवायु पर भी प्रभाव पड़ा था क्योंकि इसने धरती की भौतिक विशेषताओं को परिवर्तित कर दिया। धरती के विखण्डन ने महासागरीय धाराओं

मानवजनित कारण - इंटरनेशनल पैनल ऑर क्लाइमेट चेंज (IPCC) के अनुसार पिछली दो शताब्दियों में ग्रीनहाउस गैस में होने वाली बढ़ोतरी के दो प्रमुख कारण हैं - जीवाश्म ईंधन, भूमि उपयोग तथा कृषि।

ग्रीनहाउस प्रभाव:-

ग्रीनहाउस प्रभाव एक ऐसी धरना है जिसके द्वारा पृथ्वी का वायुमंडल खुद सूर्य के प्रकाश से CO_2 , जलवाष्प, तथा मीथेन जैसी गैसी की उपस्थिति में सौर विकिरण न केवल अपने ऊपर समाहित कर लेता है बल्कि उस ताप को भी अवशोषित कर लेता है।

जीवाश्म ईंधन का प्रयोग-

जीवाश्म ईंधन का अधिक प्रयोग होने के कारण वायुमंडल में खुद सूर्य के प्रकाश लगातार ग्रीनहाउस गैसों खासकर CO_2 की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है। वर्तमान में हमें का रकन वायु में उड़ प्रतिशत है बल्कि उस तक कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन के त्रु उत्तराथी है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव -

1) तापमान में सामान्य से अधिक बढ़ोतरी:-

जलवायु परिवर्तन के दौरान पृथ्वी का तापमान सामान्य से अधिक बढ़ जाता है। जिसका मानव जीवन व भौतिक पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।